

एकलौती बेटी ही नहीं, विमाता की किंवदंती बन जाने वाली ममता की छाया म
है। पाँच वर्ष की वय में उसे हौंड़िया ग्राम के एक संपन्न गोपालक की सबसे छोटे
बनाकर पिता ने शास्त्र से दो पग आगे रहने की ख्याति कमाई और नौ वर्षीया युवती
पाकर विमाता ने, बिना माँगे पराया धन लौटाने वाले महाजन का पुण्य लूटा।
पिता का उस पर अगाध प्रेम होने के कारण स्वभावतः ईर्ष्यालु और संपत्ति
तर्क विमाता ने उनके मरणांतक रोग का समाचार तब भेजा, जब वह मृत्यु
बन चुका था। रोने-पीटने के अपशकुन से बचने के लिए सास ने भी उसे कुछ
बहुत दिन से नैहर नहीं गई, सो जाकर देख आवे, यही कहकर और पहना-उढ़ा
उसे विदा कर दिया। इस अप्रत्याशित अनुग्रह ने उसके पैरों में जो पंख लेगा दिए
की सीमा में पहुँचते ही झड़ गए। 'हाय लछमिन अब आई' की अस्पष्ट पुनरा
स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियाँ उसे घर तक ठेल ले गईं। पर वहाँ न पिता का चि
न विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार का लेश था। दुख से शिथिल और अपमान
हुई वह उस घर में पानी भी बिना पिए उलटे पैरों ससुराल लौट पड़ी। सास को
सुनाकर उसने विमाता पर आया हुआ क्रोध शांत किया और पति के
फेंक-फेंककर उसने पिता के चिर विछोह की मर्मव्यथा व्यक्त की।

जीवन के दूसरे परिच्छेद में भी सुख की अपेक्षा दुख ही अधिक है। जब
रंग और बटिया जैसे मुख वाली पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले त
जिठानियों ने ओठ बिचकाकर उपेक्षा प्रकट की। उचित भी था, क्योंकि स
कमाऊ वीरों की विधात्री बनकर मचिया के ऊपर विराजमान पुरखिन के पद
हो चुकी थी और दोनों जिठानियाँ काक-भुशंडी जैसे काले लालों की क्रमबद्ध
इस पद के लिए उम्मीदवार थीं। छोटी बहू के लीक छोड़कर चलने के क
मिलना आवश्यक हो गया।

जिठानियाँ बैठकर लोक-चर्चा करतीं और उनके कलूटे लड़के धूल उ
करती, कूटती, पीसती, राँधती और उसकी नन्ही लड़कियाँ गोबर
ठानियाँ अपने भात पर सफ़ेद राब रखकर